Expansion of Communism in China

चीन में साम्यवाद का विकास

1917 ई० की रुसी क्रान्ति ने जहाँ सारे विश्व को प्रभावित किया वहीं चीन भी इस से अछुता नहीं रहा। इसलिए कि चीन के अन्दर साम्राज्यवादी व्यवस्था ने जैसे प्रकार से लूट खसोट मचा रखी थी उसमें रुस की बोल्शेविक क्रान्ति चीन के लिए एक आशा की किरण नज़र आ रही थी। यही कारण था कि डा. सनयात सेन का भी झुकाव अब साम्यवादी रुस की ओर होने लगा था और इनके सम्बन्ध मित्रवत होने लगे थे।

इसी बीच की बात है कि 1918 ई० में पीकिंग के अन्दर मार्क्सवाद और साम्यवाद के अध्ययन के लिए पीकिंग विश्वविद्यालय के कुछ प्राध्यापकों द्वारा एक संस्था कायम की गयी जिसमें मुख्य रुप से उसी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का एक कर्मचारी भी था जिसका नाम माओ त्से तुंग था। फिर उसी वर्ष इन लोगों ने चीन में साम्यवादी दल की स्थापना कर दी और फिर आहिस्ता-आहिस्ता इन्होंने इस दल की शाखाएँ विभिन्न स्थानों पर स्थापित कर ली जिसमें मुख्य रुप से पीकिंग, हूनान और शंघाई आदि प्रदेश थे। 1921 ई० में शंघाई में इन्होंने अपने दल का एक संयुक्त अधिवेशन बुलाया जिसमें सर्व सम्मति से इस बात का निर्णय लिया गया कि चीन के साम्राज्यवादी देशों को निकाल बाहर करना है।

अब इसके बाद चीनी साम्यवादियों ने अपने दल को सुदृढ करने का कार्य आरम्भ किया। इसके लिए उसने कृषकों और श्रमिकों का संगठित करने पर अपना ध्यान आकृष्ट किया और उनका संगठन बना कर इसे मजबूती प्रदान की। अब इन श्रमिकों और कृषकों द्वारा हड़तालें भी होने लगी। 1925 ई० में सनयात सेन की मृत्यु के उपरान्त माओ त्से तुंग ने किसान आन्दोलन का नेतृत्व किया और जमींदारों को उखाड़ फेंकने में एक अहम भूमिका निभाई। इस आन्दोलन के द्वारा कृषकों ने जमींदारों की सम्पत्ति को लूट लिया और इस पर अधिकार कर लिया। इसी बीच इन आन्दोलनकारियों के द्वारा धार्मिक मामलों में भी हस्तक्षेप किया जाने लगा और धार्मिक अंधविश्वासों को समाप्त करने का प्रयास किया जिससे पुजारी वर्ग की धार्मिक सत्ता लड़खड़ाने लगी और चीन के सामाजिक जीवन पर इसका खास असर दिखाई पड़ने लगा।

अब यहीं से सत्ताधारि दल और साम्यवादियों में मतभेद पैदा होना आरम्भ होगया और फिर यही इनके टकराव की एक बड़ी वजह बना। च्यांग काई शेक जिसके सम्बन्ध साम्यवादियों के साथ बड़े अच्छे थे अब इन कारणों से इसमें कमी आने लगी और फिर बात इतनी बढ़ गई कि च्यांग ने अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए इन पर प्रतिबंध लगा दिया और सेना की सहायता से इसका दमन करना आरम्भ कर दिया किन्तु इसके बावजूद साम्यवादियों ने अपनी हार नहीं मानी बल्कि कारखानों, बैंकों और दुकानों को अपने अधिकार में ले लिया और इसे अपनी समितियों के हवाले कर दिया। जमींदारों के साथ भी इनका खुला टकराव आरम्भ होगया।

अब च्यांग काई शेक पूरी तरह इनका विरोधी हो चुका था। इसे और भी विरोधी बनाने में चीन के धनी वर्ग का भी बड़ा हाथ था जो साम्यवादियों के विरुद्ध लगातार च्यांग काई शेक के कान भर रहे थे। पूंजीवादी देश भी च्यांग काई शेक को साम्यवादियों के विरुद्ध भड़काते रहे। जिसका परिणाम यह हुआ कि च्यांग काई शेक ने साम्यवादियों के विरुद्ध धर्मयुद्ध घोषित कर दिया। बदले में अब साम्यवादियों ने अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए एक अलग सरकार बनाने का विचार किया और इसी उद्देश्य से लाल सेना का गठन किया। कृषकों और श्रमिकों को साम्यवादियों द्वारा पूरी सहायता पहुँचाई जाने लगी।

अब माओ त्से तुंग ने चिंग कान्सान में साम्यवादियों के लिए एक पृथक क्षेत्र स्थापित किया। 1930 ई० में साम्यवादियों का मुख्य क्षेत्र कियांगसी प्रान्त बन गया। 1931 ई० में रुइचिन में साम्यवादियों द्वारा प्रथम अखिल चीनी सोवियत सम्मेलन आयोजित किया गया जिसके द्वारा माओ त्से तुंग को इसका अध्यक्ष बनाया गया।

च्यांग काई शेक ने अब साम्यवादियों को दबाने का हर संभव प्रयास किया किन्तु लाल सेना द्वारा च्यांग काई शेक के हर प्रयास को कुचल दिया गया। च्यांग काई शेक विदेशी शक्ति से अधिक साम्यवादियों को खतरनाक मानता था और इन्हें पुरी तरह समाप्त करने के लिए उनके प्रान्तों पर बम वर्षा भी करने से बाज नहीं आ रहा था। वैसी स्थिती में अब साम्यवादियों ने यह निर्णय लिया कि अब कियांगसी प्रान्त से कहीं दूर अपनी सरकार स्थापित करें अन्यथा अनवरत अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। इसलिए अब उन्होंने शान्सी प्रान्त में प्रस्थान करने का सोचा जो कियांगसी से काफी दूर था। साम्यवादियों को इस घटना को जो 13 अक्टूबर 1934 ई० को आरम्भ हुई महाप्रस्थान के नाम से याद किया जाता है। जिसका अन्त 1935 ई० में शान्सी पहुंचकर हुआ।

शान्सी पहुंच कर इन साम्यवादियों ने अपनी सरकार का पुनर्गठन किया और समाजवादी सरकार की स्थापना की साम्यवादियों को चीनी जनता का इसलिए अधिक सहयोग मिल रहा था कि वे चीन में विदेशी आक्रमण के विरोधी थे। जबकी च्यांग काई शेक विदेशीयों के विरुद्ध अधिक कारगर सिद्ध नहीं हो रहा था क्योंकि च्यांग अपनी सारी शक्ति साम्यवादियों को कुचलने में लगा रहा था साम्यवादियों को वह विदेशीयों से अधिक घातक मानता था। यही कारण था कि साम्यवादियों का सफाया करने के लिए वह स्वंय शान्सी की ओर प्रस्थान किया और अपने सेनापति लियांग को यह आदेश दिया कि वह सारी शक्ति लगाकर साम्यवादियों का अन्त कर दे किन्तु लियांग जब शान्सी पहुंचा और साम्यवादियों के सम्पर्क में आया तो साम्यवादियों का राष्ट्र प्रेम देखकर वह भी उन साम्यवादियों के साथ मिल गया।

च्यांग कोई शेक के शान्सी पहुंचने पर लिच्यांग ने च्यांग को लगातार समझाने का प्रयास किया और कहा कि जापानियों से युद्ध करने के बजाये परस्पर लड़ना ठीक नहीं है किन्तु च्यांग किसी तरह नहीं माना नतीजा यह निकला कि अब लियांग ने सियान नामक स्थान पर च्यांग कोई शेक को बन्दी बना लिया। बन्दीकरण के दौरान च्यांग के प्रति सम्मानपूर्ण व्यवहार किया गया। हालांकि च्यांग के दृष्टिकोण में आंशिक परिवर्तन आया किन्तु उसने लिखित रूप से कोई आश्वासन देने से साफ इन्कार कर दिया। इधर चीन में च्यांग की लोकप्रियता को देखते हुए 25 दिसम्बर 1936 ई. को पूर्ण सम्मान के साथ नानकिंग वापस भेज दिया गया। च्यांग कोई शेक के सुरक्षित नानकिंग पहुँच जाने के बाद साम्यवादियों और नानकिंग सरकार के बीच एक समझौता हो गया। अब दोनों दलों ने परस्पर सहयोग का वचन देकर गृहयुद्ध को बन्द कर दिया और संगठित होकर जापान का विरोध करना आरम्भ कर दिया। किन्तु परस्पर विरोधी आदर्शों के कारण यह समझौता स्थायी साबित नहीं हो सका।

—x—